INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 11 | DECEMBER - 2023

''रीवा जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के छात्रों की तार्किक योग्यता का अध्ययन''

प्रसन्न सिंह[1] , डॉ. एस.के. त्रिपाठी[2]
[1]शोधार्थी शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]सहायक प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

शिक्षा व्यक्ति की सम्पूर्णता का परिमाप है। यह व्यक्ति के चरित्र को उत्कृष्ट बनाती है। शिक्षा से ही व्यक्ति का चरित्र प्रखर बनता है। शिक्षा से ही व्यक्ति को सही रूप में देखा जाता है। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता है। मानव शिक्षा के बगैर सम्पूर्णता की प्राप्ति नहीं कर सकता है। इस प्रकार शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। बालक प्रारम्भ में माता–पिता व अन्य सदस्यों से सीखता है। घर से बाहर निकलने के पश्चात् वह विद्यालय, खेल के मैदान तथा पड़ोस से नवीन अनुभव प्राप्त करने का परिणाम यह होता है, कि वह अपने वातावरण तथा जीवन में आने वाली नवीन परिस्थितियों से समायोजन करना सीख जाता है। इस प्रकार से शिक्षा का क्षेत्र व्यापक है।

मुख्य शब्द – शासकीय, अशासकीय, विद्यालय, छात्र, कला एवं विज्ञान संकाय।

प्रस्तावना –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जन्म लेता है और समाज में रहकर उसकी विभिन्न शक्तियों का विकास होता है तथा इस विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। मनुष्य को पूर्ण सामाजिक प्राणी बनाने में या उसका सामाजीकरण करने में शिक्षा का विशेष योगदान रहता है। शिक्षा को मानव जाति के सर्वांगीण प्रगति का श्रेष्ठतम साधन कहा जा सकता है। पाषाण युग से आज तक मानव सभ्यता ने परमाणु युग और कम्प्यूटर युग में प्रवेश कर लिया है। इसका श्रेय मुख्यतः शिक्षा को ही जाता है। शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र–सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता को पुनर्जीवित एवं पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है। शिक्षा की आधुनिक धारणा के अनुसार शिक्षा बालक के अन्दर छिपी हुई समस्त शक्तियों को सामाजिक वातावरण में विकसित करने की कला है।

प्रत्येक शोध नवीन ज्ञान प्राप्त करने में योगदान करता है, जो नवीन समाज के निर्माण में बहुत अधिक सहायक होते हैं। भारत जैसे विकासशील देश के सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नये विचारों की बहुत ही आवश्यकता है और इस नवीन ज्ञान से हमारे देश में निवास करने वाले जनमानस में आत्मविश्वास की भावना प्रबल होगी। साथ ही जनमानस के आत्मविश्वास की भावना के विकसित हो जाने के फलस्वरूप हम अपनी समस्याओं का हल सहजतापूर्वक कर सकेंगे। अतः मानव मस्तिष्क निर्माणक शक्ति को जगाने में शोध की काफी

महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत अपने विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर होने के लिए मनुष्य की निर्माणक विचार शक्ति बहुत ही महत्वपूर्ण है।

भारतीय लोकतंत्र का प्रमुख मौलिक उद्देश्य भारत को विकास के रास्ते की ओर बढ़ाना है। शोध विकसित व अविकसित समाजों का तुलनात्मक अध्ययन करता है, जिसके फलस्वरूप समाज को मनचाहे विकास की ओर ले जाने में सहयोग मिलता है। यही कारण है कि भारतवर्ष में सामुदायिक विकास को सामाजिक प्रगति का आधार स्तम्भ माना है। अतः आवश्यक है कि सामुदायिक जीवन से जुड़े सही समंकों की जानकारी हो। इस ज्ञान हेतु भी भारत में शोध की नितान्त आवश्यकता है।

विश्लेषण –

अध्ययन क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कला संकाय के छात्र–छात्राओं में से किस विद्यालय के छात्रों में समस्या समाधान की तार्किक योग्यता समुन्नत स्तर की है से सम्बन्धित प्राथमिक समंकों को सर्वेक्षण के दौरान अनुसूची के सहयोग प्राथमिक स्तर पर संकलित कर सारणी क्रमांक 1 में वर्गीकरण के साथ प्रस्तुत कर विश्लेषण किया गया है –

सारणी क्रमांक 1
जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कला संकाय के छात्रों में तार्किक विवरण

क्र.	वर्गीकरण एवं विवरण	उत्तरदाताओं से प्राप्त अभिमतों का संग्रहण	
		उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कला संकाय के छात्रों में	618	42.92
2	अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कला संकाय के छात्रों में	609	42.29
3	कुछ कह नहीं सकते	213	14.79
	कुल योग	1440	100.00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपर्युक्त सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि यह जिला के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कला संकाय के छात्रों में तार्किक योग्यता से सम्बन्धित है। शोधकर्ता द्वारा दोनो उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से चयन किये गये कुल 1440 छात्र–छात्राओं में 618 छात्रों ने बताया कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कला संकाय के छात्रों में तार्किक योग्यता अच्छा है, जिसके प्रतिशत 42.92 है, 609 छात्र–छात्राओं ने स्वीकारा कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कला संकाय के छात्रों में समस्या समाधान की तार्किक योग्यता अच्छी है, जिनके प्रतिशत 42.29 है और 213 छात्र–छात्राओं ने बतलाया कि कुछ कह नहीं सकते जिनके प्रतिशत 14.79 है।

जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्रों में तार्किक योग्यता के लिए इन विद्यालयों में से किसके छात्रों में यह बहुत अच्छा है, से सम्बन्धित प्राथमिक समंकों के सर्वेक्षण के दौरान अनुसूची के माध्यम से संकलित कर सारणी क्रमांक 2 में वर्गीकृत कर प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है –

सारणी क्रमांक 2
जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्रों में तार्किक योग्यता

क्र.	वर्गीकरण एवं विवरण	उत्तरदाताओं से प्राप्त अभिमतों का संग्रहण	
		उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान संकाय छात्रों में	694	48.19
2	अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्रों में	681	47.29
3	कुछ कह नहीं सकते	65	4.51
	कुल योग	1440	100.00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपर्युक्त सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि यह जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्रों में तार्किक योग्यता के विवरण से सम्बन्धित है। शोधकर्ता द्वारा शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से चयन किये गये कुल 1440 छात्रों मे 694 छात्रों ने स्वीकार किया है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्रों में तार्किक क्षमता अत्यधिक है, जिनके प्रतिशत 48.19 है, 681 छात्रों ने अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्रों में तार्किक क्षमता अत्यधिक है, जिनके प्रतिशत 47.29 है और 65 छात्रों ने बतलाया कि कुछ कह नहीं सकते जिनके प्रतिशत क्रमशः 4.51 है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जिले के दोनों उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से चयन किये गये सबसे अधिक छात्र–छात्राओं ने बतलाया कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कला संकाय के छात्रों में समस्या समाधान की तार्किक योग्यता उच्च स्तर का है एवं जिले के दोनों उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के चयनित सबसे अधिक छात्रों ने स्वीकार किया कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्रों में तार्किक क्षमता अधिक है।

संदर्भ –

1. राय, पारसनाथ (1997) – अनुसंधान परिचय, जैन एण्ड सन्स प्रिन्टर्स, आगरा।
2. अग्रवाल, जे.सी. (2007) – शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2006) – शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
4. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. (2010) – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
5. पाठक, पी.डी. (2006) – शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
6. भटनागर, ए.बी. तथा भटनागर एम (2005) – मापन एवं मूल्यांकन, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ.